अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, मुंबई

परीक्षा सत्र : नवम्बर/दिसम्बर 2018

परीक्षा का नाम : अलंकार पूर्ण

विषय : गायन/वादन (स्वरवाद्य) (प्रथम प्रश्नपत्र)

दि. 11/11/2018 समय : सुबह 9 से 12 कुल अंक : 100

सूचनाएँ : (१) प्रथम प्रश्न अनिवार्य है।
(२) अन्य प्रश्नों में से **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
(३) कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(४) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्र. 1. (सा) निम्नलिखित रागों में से किसी एक राग का संपूर्ण शास्त्रीय वर्णन कीजिए। : **(6)**

(1) बिलासखानी तोड़ी (2) बिहागड़ा (3) देसी

(रे) इनमें से किसी एक राग में विलंबित लय का ख्याल/ मसीतखानी गत **(8)**

(ग) किसी एक द्रुत या मध्यलय का ख्याल/रजाखानी गत दो आलाप तथा दो तानों/तोड़ों के साथ। **(3 + 3 = 6)**

प्र. 2. नए रागों का निर्माण - तत्व क्या है ? मिश्र जोड़ तथा संकीर्ण रागों की परिभाषा समझा कर आपके पाठ्यक्रम में से कौन - कौन से राग उल्लिखित प्रकार के अन्तर्गत आते हैं उसका विश्लेषण कीजिए। **(12 + 8 = 20)**

प्र. 3. किन्हीं दो राग - जोड़ियों में भेदाभेद दो आलाप तथा दो तानों के साथ बताइए। : **(6 + 2 + 2 x 2 = 20)**

(सा) तिलककामोद - देसी

(२) जोगकंस – भैरव के स्थान पर चंद्रकंस रख सकते है।

(ग) मियाँ मल्हार – दरबारी कान्हड़ा

प्र. 4. निम्नलिखित गीतप्रकार अपने पाठ्यक्रम में से दो अलग अलग रागों में दिए गए सूचनानूसार स्वरलिपिबध्द कीजिए। :

(10 + 5 + 5 = 20)

(1) तराना या त्रिवट – पं. पलुस्कर पध्दति में

(2) धमार – स्थायी की $1\frac{1}{2}$ गुण तथा अंतरा की तिगुण – भातखंडे पध्दति में

प्र. 5. ''रागांग'' वर्गीकरण में स्वर – साम्य की तुलना में स्वरूप साम्य का अधिक ध्यान रखा गया'' — इस कथन की पुष्टि करते हुए 'कानड़ा' तथा 'तोड़ो' अंग के रागों को स्वरविस्तार के साथ वर्णन कीजिए। **(20)**

प्र. 6. प्राचीन निबध्द गान के प्रकारों को बताते हुए आज तक के उसके विकास पर प्रकाश डालिए। **(20)**

अथवा

अपने प्रिय वाद्य की उत्पत्ति तथा विकास का इतिहास बताते हुए उसके विभिन्न बाज तथा घरानों का वर्णन कीजिए। आप के वादन–शैली की क्या – क्या विशेषताएँ है ?

प्र. 7. अपने पाठ्यक्रम में से 10 मात्रावाले तालों का तुलनात्मक विवेचन कीजिए। उनमें से किसी भी एक ताल की 2 में 3 तथा दूसरे की 4 में 5 लयकारी में लिपिबध्द कीजिए। **(20)**